★ पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय के गोडबोले सांस्कृतिक सभागार में 19 जुलाई, 2011 को आयोजित 'संवेदना' कार्यक्रम के दौरान अपनी काव्य रचनाएँ प्रस्तुत करते हुए पश्चिम रेलवे के उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (योजना) श्री संतोष कुमार झा तथा उनकी कविताओं पर आधारित गीत प्रस्तुत करते हुए पश्चिम रेलवे सांस्कृतिक संगठन के विभिन्न कलाकार।

'संवेदना' कार्यक्रम के जरिये मानवीय अनुभूतियों की सजीव अभिव्यक्ति

पश्चिम रेलवे सांस्कृतिक संगठन के सचिव और उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (योजना) के पद पर कार्यरत बहुगुण सम्पन्न वरिष्ठ अधिकारी श्री संतोष कुमार झा की काव्य रचनाओं पर आधारित गीतों की प्रस्तुति मंगलवार, 19 जुलाई, 2011 को चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय के गोडबोले सांस्कृतिक सभागार आयोजित 'संवेदना' कार्यक्रम में की गई, जिसमें हुई मानवीय अनुभूतियों की सजीव अभिव्यक्ति ने इस अनूठे कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

श्री झा एक बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व का नाम है, जो मृदुभाषी, कर्मठ, उत्साही, बुद्धिजीवी एवं कला के उपासक एवं उत्तम कवि भी हैं। 'संवेदना' नामक कार्यक्रम में प्रस्तुत कविताएँ जैसे अंतर्मन की व्याख्या कर रही थीं। आपने अपनी कविताओं में आम व्यक्ति की भावना को मूर्त रूप दिया है, जिनकी भावनाओं का प्रकटीकरण अत्यंत सहज एवं सरल तरीके से किया गया, जो सभी के अंतर्मन को छू गया। हिन्दी में उर्दू का सहज प्रयोग आपके हिन्दी पर अधिकार तथा उर्दू के लगाव को दर्शाता है। कविताओं के माध्यम से जनमानस के अति उच्च मनोभावों को व्यक्त करना आपकी विशेषता है। आज के परिप्रेक्ष्य में आतंकवाद से व्यथित मन, वेदना को भाषा का परिवेश पहना कर, विवशता, प्रारब्ध, सब्रो सुकून, नये हौसलों के साथ शुभ प्रभात का स्वागत निश्चित ही स्वागत योग्य रहा। विविध भावों से सजे कल्पना के इंद्रधनुषी रंगों की अपनी ही महत्ता दृष्टिगोचर हुई। कविता में 'क्यों?' यह शब्द सोचने को मजबूर कर देता है। 'क्यों?' इस सवाल में ज़िंदगी की तलाश बाकी नज़र आई। जीवन के विभिन्न रंग विदूषक की भांति रोज़ नये खेल दिखाते हैं। कुछ नाजुक भावनाएँ बड़ी कोमलता के साथ जीवन के कटु सत्य से साक्षात्कार करवाती हैं, जो कवि मन की गहराई से उठती गूंज का प्रतीक है। अनेक कविताओं के माध्यम से आपके संवेदनशील एवं सृजनशील व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब रही 'संवेदना'। शीघ्र ही आपकी समस्त कविताओं की पुस्तक प्रकाशित होने वाली है।

श्री झा केवल कलम के ही धनी नहीं है, अपितु अपने वाक् चातुर्य से मंच संचालन में भी निष्णात हैं। आपने कई कार्यक्रमों का सफल संचालन किया है। आपके संचालन में जीवंतता का निरंतर आभास होता है। पश्चिम रेलवे के मुख्यालय में जब आप किसी कार्यक्रम का संचालन करते हैं, तो हास्य का पुट लिए आपका संचालन, प्रस्तुतीकरण एवं हाजिर जवाबी ज्यादा दर्शक एवं श्रोतागण बटोरती है। आपका हर अंदाज़ निराला होता है। पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के सचिव के बतौर आपके मार्गदर्शन में संगठन ने प्रधान कार्यालय में कई यादगार कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। पुराने गीतों में मशहूर गायकों सर्वश्री मो. रफी, तलत महमूद, किशोर कुमार और मन्ना डे तथा सुश्री लता जी एवं आशा जी के गीतों के साथ-साथ आपके निर्देशन में शमशाद बेगम, सुरैया, मुबारक बेगम इत्यादि के गीतों के भी बेमिसाल कार्यक्रम पेश किये गये। मुंशी प्रेमचंद लिखित कथा 'बड़े भाई साहब' के नाट्य रूपांतरण में आपने 'बड़े भाई' का अभिनय भी खूब किया। प्रेमचंद जी की ही लिखित कहानियों को नाट्य रूपांतरित कर आपने 'पंच परमेश्वर' तथा 'नमक का दारोगा' का निर्देशन भी किया। उनकी कुछ पंक्तियाँ ही उनके आशय को बखूबी व्यक्त करती हैं-''आगाज़ को सुनकर, कहानी पे भरोसा मत करना, सुनने वालों से कह दो, कि अंज़ाम अभी बाकी है!''

'नमक का दारोगा' नाटक का मंचन: पश्चिम रेलवे के राजभाषा विभाग के तत्वावधान में गत शुक्रवार, 5 अगस्त, 2011 को प्रधान कार्यालय, चर्चगेट के 'गोडबोले सांस्कृतिक सभागृह' में हिंदी साहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के मुख्य बिजली इंजीनियर (सेवा) श्री एल.सी. सारसर मुख्य अतिथि के रूप में तथा एस एन डी टी महिला विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ. सुनीता साखरे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यान देते हुए कहा कि मुंशीजी ने अपने कथा साहित्य में महिलाओं को पुरुषों के बराबर दर्जा दिया था। उस समय मुंशी प्रेमचंद बेटियों को पैतृक सम्पत्ति में बेटों के समान हक़दार समझते थे, जिसका समर्थन आज के दौर में न्यायपालिका ने किया है। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के कलाकारों ने प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी 'नमक का दारोगा' का नाट्य रूपांतर का सफल मंचन किया, जिसकी दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में सभी विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री के. पी. सत्यानंदन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. रोशनी खुबचंदानी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने किया। इस अवसर पर प्रेमचंद जी के साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

★ नमक के दारोगा नाटक के दो भावपूर्ण दृश्य।

✍ श्रीमती पूजा पवार,
कार्यालय अधीक्षक, परिवहन विभाग, चर्चगेट